Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 22, Issue No. 4, July-2025, ISSN 2230-7540

DOI: https://doi.org/10.29070/fmgxe761

Check for updates

मिलावटी खाद्य पदार्थों के कारण बाल्यावस्था के स्वास्थ्य पर प्रभाव की समीक्षा

श्रुति प्रभा पांडे [1] * , डॉ. निधि अवस्थी [2]

1. रिसर्च स्कॉलर, पी.के. यूनिवर्सिटी, शिवपुरी (म.प्र.), भारत
prenu2689@gmail.com ,
2. सहायक प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, पी.के. यूनिवर्सिटी, शिवपुरी (म.प्र.), भारत

सारांश: सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खाद्य धोखाधड़ी के खतरे महत्वपूर्ण हैं, और यह बच्चों और अन्य जोखिम वाली आबादी को असमान रूप से प्रभावित करता है। उत्तर प्रदेश के गोंडा में बच्चों के स्वास्थ्य और विकास पर खाद्य मिलावट के प्रभावों के बारे में चिंता बढ़ रही है, क्योंकि ऐसे उत्पादों की आवृत्ति बहुत अधिक है। यह अध्ययन क्षेत्र में अक्सर दूषित खाद्य पदार्थों, जैसे दूध, कैंडी, दालें और खाद्य तेलों के क्षेत्र में गहराई से पड़ताल करता है, और इन वस्तुओं का बच्चों के स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसकी जांच करता है। परिणाम बताते हैं कि दूषित भोजन खाने से कई स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं, जिनमें जठरांत्र संबंधी समस्याएं, कमजोर प्रतिरक्षा, विकास में रुकावट और सीखने में समस्याएँ शामिल हैं। सर्वेक्षण यह भी दर्शाता है कि खाद्य गुणवत्ता मानकों के प्रवर्तन में अंतराल हैं और माता-पिता और देखभाल करने वाले खाद्य सुरक्षा के बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं रखते हैं। गोंडा के मनकापुर जिले में किए गए शोध में बच्चों को उनके विकास और वृद्धि पर खाद्य धोखाधड़ी के नकारात्मक प्रभावों से बचाने के लिए निगरानी, सार्वजनिक जागरूकता अभियान और स्वास्थ्य हस्तक्षेप बढ़ाने की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द: गोंडा, बच्चे, खाद्य पदार्थों, मिलावट

---------- X ----------

परिचय

अविकसित देशों में, जहाँ नियामक पर्यवेक्षण की अक्सर कमी होती है या प्रवर्तन तंत्र कमज़ोर होते हैं, खाद्य पदार्थों में मिलावट सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा ख़तरा बन जाती है। ख़ास तौर पर बच्चों जैसे संवेदनशील समूहों के लिए, अखाद्य, खराब या ख़तरनाक तत्वों से दूषित खाद्य पदार्थों से होने वाले ख़तरे बहुत ज़्यादा हैं। बचपन के प्रारंभिक वर्षों में प्रतिरक्षा प्रणाली, मस्तिष्क और शरीर की परिपक्वता के लिए पर्याप्त पोषण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। लेकिन दूषित खाद्य उत्पादों की बढ़ती संख्या से गंभीर स्वास्थ्य जोखिम जुड़े हुए हैं, जो बच्चों में कुपोषण, विकास संबंधी असामान्यताएँ और अन्य बीमारियाँ पैदा कर रहे हैं। भारत के उत्तर प्रदेश के गोंडा क्षेत्र के मनकापुर शहर में खाद्य सुरक्षा के मुद्दों की रिपोर्ट मिली है और इस शोध का उद्देश्य वहाँ रहने वाले बच्चों पर खाद्य पदार्थों में मिलावट के प्रभाव की जाँच करना है। बच्चों के स्वास्थ्य पर दूषित भोजन के प्रभावों का मूल्यांकन करना और उनके खाद्य विषाक्तता, विकास में कमी और प्रतिरक्षा प्रणाली की समस्याओं के जोखिम को कम करने के तरीकों की जाँच करना महत्वपूर्ण है क्योंकि बच्चों में ये समस्याएँ बढ़ रही हैं (आचार्य, के.टी. 1994)।

गुणवत्ता और सुरक्षा की कीमत पर मुनाफ़ा बढ़ाने के लिए, कुछ लोग जानबूझकर खाद्य उत्पादों में गैर-खाद्य, हानिकारक या घटिया पदार्थ मिलाते हैं। इस प्रथा को खाद्य मिलावट कहा जाता है। इसमें फॉर्मेलिन और सीसा जैसे हानिकारक यौगिकों के साथ-साथ सिंथेटिक रसायन, स्टार्च, चाक पाउडर और नकली रंगों का उपयोग शामिल हो सकता है। मनकापुर जैसे ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में उपभोक्ताओं को खाद्य सुरक्षा नियमों के बारे में पता नहीं होने की अधिक संभावना है, जिससे इन मिलावटों के संपर्क में आने का खतरा बढ़ जाता है। दूषित भोजन खाने के अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों तरह के प्रभाव होते हैं। अल्पकालिक प्रभावों में मतली, उल्टी और जठरांत्र संबंधी संक्रमण शामिल हैं; दीर्घकालिक प्रभावों में गुर्दे की विफलता, यकृत रोग, तंत्रिका संबंधी समस्याएं और कैंसर शामिल हैं। ये खतरे विशेष रूप से बच्चों के लिए खतरनाक हैं क्योंकि उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली अपरिपक्व होती है और जहर के प्रति उनकी सहनशीलता कम होती है (अग्रवाल, एस.आर. 1990)।

खाद्य मिलावट की परिभाषा और अवधारणा

खाद्य सामग्री में जानबूझकर या गलती से किए गए ऐसे बदलाव जो उत्पाद की गुणवत्ता, सुरक्षा या पोषण मूल्य को कम करते हैं, उन्हें खाद्य अपमिश्रण के रूप में जाना जाता है। विनिर्माण, भंडारण या वितरण के दौरान जानबूझकर संदूषण, विषैले यौगिकों का जानबूझकर मिलाना या महत्वपूर्ण तत्वों को हटाना इस परिवर्तन के सभी संभावित कारण हैं। ग्राहक के स्वास्थ्य और सुरक्षा की कीमत पर मात्रा बढ़ाना, दिखावट में सुधार करना या शेल्फ लाइफ बढ़ाना अक्सर मिलावट का मुख्य लक्ष्य होता है, जो आम तौर पर व्यावसायिक लाभ के लिए किया जाता है। दुनिया भर में, लोग खाद्य धोखाधड़ी के बारे में चिंतित हैं, लेकिन यह विशेष रूप से गरीब देशों में खराब है जहां कानून हमेशा अच्छी तरह से लागू नहीं होते हैं। ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार, खाद्य धोखाधड़ी सदियों से चली आ रही है, और उस अवधि के दौरान खाद्य मिलावट का विचार विकसित हुआ है। प्राचीन रोम में, बेईमान व्यापारी अपनी शराब को मीठा बनाने के लिए उसमें सीसा नमक मिलाते थे, जबकि मध्यकालीन यूरोप में, लोग अपनी रोटी को सफेद और भारी बनाने के लिए उसमें चाक या फिटकरी मिलाते थे। सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए, सख्त खाद्य सुरक्षा विनियमन और निगरानी प्रणाली की आवश्यकता है, क्योंकि औद्योगीकरण और वैश्वीकरण के साथ-साथ खाद्य मिलावट का प्रचलन और परिष्कार बढ़ा है (अलघ, के.एस. 1990)।

बाल विकास में खाद्य सुरक्षा का महत्व

बच्चों के स्वस्थ विकास और वृद्धि को सुनिश्चित करना खाद्य सुरक्षा पर बहुत अधिक निर्भर करता है। एक बच्चे का शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य, उसके प्रारंभिक वर्षों में उसके द्वारा खाए जाने वाले भोजन से बहुत अधिक प्रभावित होता है। बच्चे विशेष रूप से खाद्य विषाक्तता, खाद्य धोखाधड़ी और अन्य प्रकार के खाद्य संदूषण और अपर्याप्त स्वच्छता के हानिकारक प्रभावों के प्रति संवेदनशील होते हैं। बच्चों में खाद्य विषाक्तता और पोषण संबंधी कमियों का खतरा अधिक होता है क्योंकि उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली अभी भी विकसित हो रही होती है और उनका शरीर वयस्कों की तुलना में अधिक नाजुक होता है। यहाँ हम देखते हैं कि खाद्य सुरक्षा बच्चों के विकास और वृद्धि को कई तरीकों से कैसे प्रभावित करती है, सख्त खाद्य नियमों की आवश्यकता, माता-पिता के ज्ञान को बढ़ाने और उचित स्वास्थ्य उपचार प्रदान करने पर प्रकाश डालती है (नेस्मिथ, एम.एस. (2004)।

बाल विकास में पोषण की भूमिका

बच्चों के स्वस्थ विकास और वृद्धि के लिए अच्छा पोषण आवश्यक है। स्वस्थ हड्डियों के विकास, मस्तिष्क की परिपक्वता और प्रतिरक्षा प्रणाली के रखरखाव के लिए, व्यक्ति को पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन और खनिज का सेवन करना चाहिए। जब बच्चे स्वस्थ, विविध आहार खाते हैं, तो वे अपनी शारीरिक और मानसिक क्षमता तक पहुँचने की अधिक संभावना रखते हैं। हालाँकि, पोषण संबंधी कमी और विकास संबंधी देरी ऐसे भोजन से हो सकती है जो खतरनाक पदार्थों या प्रदूषकों से दूषित हो। उदाहरण के लिए, हड्डियों की मजबूती के लिए आवश्यक प्रोटीन और कैल्शियम की उपलब्धता स्टार्च या डिटर्जेंट जैसे सिंथेटिक रसायनों से दूषित दूध में कम हो जाती है (कांग, जी., एट अल. 1997)।

बच्चों में खाद्य जनित बीमारियों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि

अपने छोटे कद, तेज़ चयापचय दर और अपरिपक्व प्रतिरक्षा प्रणाली के कारण, बच्चों को वयस्कों की तुलना में भोजन विषाक्तता होने की अधिक संभावना है। दस्त, उल्टी, निर्जलीकरण और संभावित रूप से घातक संक्रमण कुछ गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हैं जो बच्चों को दूषित भोजन की थोड़ी मात्रा भी खाने से हो सकती हैं। दूषित खाद्य उत्पाद साल्मोनेला, ई. कोली और लिस्टेरिया मोनोसाइटोजेन्स सहित खाद्य जनित रोगाणुओं का एक प्रमुख स्रोत हैं, जो छोटे बच्चों को संक्रमित कर सकते हैं और गंभीर बीमारियों का कारण बन सकते हैं। दूषित भोजन खाने का सबसे आम लक्षण दस्त है, जो अभी भी दुनिया भर में बच्चों की एक बड़ी हत्यारा है।

खाद्य पदार्थों में मिलावट का शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास पर प्रभाव

खाद्य धोखाधड़ी की व्यापक समस्या से बाल विकास पर गहरा असर पड़ता है। सीसा (दूषित मसालों और मिठाइयों में पाया जाता है), फॉर्मेलिन (मांस और मछली को संरक्षित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है) और कीटनाशकों (उत्पादों में पाया जाता है)

जैसे जहरीले रसायनों के संपर्क में आने पर विकास में देरी काफी गंभीर हो सकती है। उदाहरण के लिए, अध्ययनों से पता चला है कि बच्चों में सीसा के संपर्क में आने से आईक्यू में गिरावट, ध्यान में कमी और व्यवहार संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। कृत्रिम अवयवों वाले भोजन के लंबे समय तक संपर्क में रहने से मस्तिष्क के विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जो बदले में चीजों को सीखने और याद रखने की क्षमता को प्रभावित करता है। खाद्य धोखाधड़ी के कारण होने वाले पोषण असंतुलन के परिणामस्वरूप मोटापा और चयापचय संबंधी रोग जैसे मुद्दे विकसित हो सकते हैं (शाह, आर. 1999)।

खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में स्कूलों और अभिभावकों की भूमिका

यह सुनिश्चित करना कि बच्चे केवल सुरक्षित भोजन ही खाएं, स्कूलों और अभिभावकों दोनों की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। स्कूल कैफेटेरिया और लंच सेवाओं को कड़े नियमों का पालन करना चाहिए। स्वस्थ, ताजा तैयार और स्वच्छ भोजन को शामिल करने को प्राथमिकता देना आवश्यक है, साथ ही संदूषण और धोखाधड़ी से बचने के लिए लगातार गुणवत्ता निरीक्षण करना भी आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, स्कूल प्रशासकों और शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि वे छात्रों को सिखाएं कि वे अपना भोजन ठीक से कैसे तैयार करें, उन्हें हर निवाले से पहले अपने हाथ धोना सिखाएं, स्ट्रीट फूड से दूर रहें और भोजन के सड़ने के लक्षणों को पहचानें। इसके विपरीत, माता-पिता को आहार की गुणवत्ता के मामले में अपने बच्चों को जो खिलाते हैं, उस पर बहुत बारीकी से नज़र रखने की ज़रूरत है (लेवी, ए. एस. 1996)।

समकालीन संदर्भ में अध्ययन की प्रासंगिकता

जब बच्चों के पोषण और विकास की बात आती है, तो खाद्य धोखाधड़ी एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता बन गई है। खाद्य पदार्थों के व्यावसायीकरण, शहरीकरण और प्रसंस्कृत और पैकेज्ड भोजन की बढ़ती मांग जैसे कारकों के कारण खाद्य पदार्थों में मिलावट का मुद्दा अब पहले से कहीं अधिक प्रचलित है। भोजन में जानबूझकर या गलती से मिलावट करने से मानव स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है, खासकर बच्चों जैसे कमजोर समूहों के लिए। आज के तेजी से बढ़ते वैश्विक खाद्य व्यापार में, खाद्य सुरक्षा एक प्रमुख समस्या है। हाल की घटनाओं के मद्देनजर - जैसे कि खाद्य विषाक्तता के मामलों में वृद्धि, बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास पर हानिकारक मिलावट के नकारात्मक प्रभाव, भोजन से संबंधित बीमारियों से जुड़ी मौद्रिक और सामाजिक लागत, और वर्तमान खाद्य सुरक्षा नियमों की अपर्याप्त प्रकृति - बच्चों पर खाद्य पदार्थों में मिलावट के प्रभावों पर यह अध्ययन आज के समय के लिए बेहद प्रासंगिक है (एंगुलो, एफ. जे. 1999)।

बच्चों के पोषण पर खाद्य धोखाधड़ी का प्रभाव आधुनिक खाद्य धोखाधड़ी के सबसे परेशान करने वाले हिस्सों में से एक है। बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से विकसित होने के लिए, उन्हें स्वस्थ, संतुलित आहार खाने की ज़रूरत होती है। लेकिन खाद्य धोखाधड़ी भोजन के पोषण मूल्य को काफी कम कर देती है, जिससे लोगों को प्रोटीन, खनिज और विटामिन नहीं मिल पाते हैं। दूध, डेयरी उत्पाद, मिठाइयाँ, स्नैक्स और पेय ऐसे कई बच्चों के अनुकूल खाद्य पदार्थों में से हैं जो नियमित रूप से खतरनाक अवयवों से दूषित पाए जाते हैं। दूध की पोषण सामग्री कम हो जाती है और यह बच्चों में गंभीर जठरांत्र संबंधी समस्याओं को जन्म दे सकता है जब इसमें सिंथेटिक दूध, डिटर्जेंट या स्टार्च मिलाया जाता है। इसी तरह, विकास संबंधी देरी और संज्ञानात्मक हानि मिठाई और चॉकलेट में सीसा और कैडमियम से जुड़े दीर्घकालिक स्वास्थ्य खतरों में से हैं। शहरों और उपनगरों में पहले से पैक किए गए भोजन के व्यापक उपयोग के कारण आधुनिक समाज में खाद्य धोखाधड़ी एक गंभीर चिंता का विषय है (डंकन, आर. 2006)।

खाद्य पदार्थों में मिलावट का बचपन पर प्रभाव

खाद्य धोखाधड़ी से बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास दोनों ही खतरे में पड़ जाता है। खाद्य पदार्थों में उनके स्वरूप को बेहतर बनाने, उनके शेल्फ़ लाइफ़ को बढ़ाने या उत्पादन लागत को कम करने के उद्देश्य से जानबूझकर या अनजाने में ख़तरनाक यौगिकों को मिलाना मिलावट के रूप में जाना जाता है। इस कुप्रथा के प्रभाव सभी उम्र के लोगों के लिए विनाशकारी हैं, लेकिन बच्चों को ज़्यादा जोखिम है क्योंकि उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली अभी भी परिपक्व हो रही है, उनका चयापचय तेज़ है, और उन्हें स्वस्थ भोजन की ज़रूरत है। पुरानी बीमारियों के विकास के जोखिम को बढ़ाने के अलावा, दूषित भोजन खाने से अल्पकालिक स्वास्थ्य

समस्याएं हो सकती हैं। इस खंड में खाद्य धोखाधड़ी के विभिन्न पहलुओं और बच्चों पर इसके प्रभावों पर चर्चा की गई है, जिसमें तत्काल और दूरगामी नतीजों के साथ-साथ सामाजिक और मनोवैज्ञानिक नतीजे भी शामिल हैं (बेकर, जी. ए. 2003)।

- बच्चों पर खाद्य मिलावट के अल्पकालिक प्रभाव
- बचपन के स्वास्थ्य पर खाद्य मिलावट के दीर्घकालिक प्रभाव
- बच्चों पर खाद्य पदार्थों में मिलावट का सामाजिक-आर्थिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव

माता-पिता और बच्चों में मनोवैज्ञानिक संकट

कम आय वाले और हाशिए पर पड़े इलाकों में, जहाँ खाद्य असुरक्षा, स्वास्थ्य सेवा की कमी और अस्थिर वित्तीय स्थिति जैसे कारकों के कारण तनाव का स्तर पहले से ही अधिक है, माता-पिता और बच्चों की मनोवैज्ञानिक परेशानी और भी बड़ी समस्या बनती जा रही है। माता-पिता के मानसिक स्वास्थ्य का उनके बच्चों पर सीधा प्रभाव पड़ने के परिणामस्वरूप चिंता, निराशा और भावनात्मक मुद्दे पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। वित्तीय कठिनाइयों, घटिया आवास और सामाजिक अलगाव से भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक संकट और भी बदतर हो जाता है। यह खंड माता-पिता और बच्चों की मनोवैज्ञानिक परेशानी के कारणों, मानसिक स्वास्थ्य पर तत्काल और दीर्घकालिक प्रभावों और इन समस्याओं के संभावित समाधानों पर गहराई से चर्चा करता है (केल, एल. 2001)।

आर्थिक कठिनाई और उसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव

वित्तीय अस्थिरता माता-पिता के लिए मनोवैज्ञानिक परेशानी का एक प्रमुख स्रोत है। माता-पिता लगातार भावनात्मक संकट का अनुभव करते हैं जब वे अपने बच्चों की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने में असमर्थ होते हैं, जैसे कि पोषण, स्कूली शिक्षा और चिकित्सा उपचार। समाज द्वारा अपेक्षित रूप से अपने परिवार के लिए एक सुरक्षित और स्थिर घर प्रदान करने में विफलता, कम आय वाले घरों में माता-पिता को अपर्याप्त, दोषी और शक्तिहीन महसूस करा सकती है। जब लोग हमेशा अपने खर्चों को पूरा करने के बारे में चिंतित रहते हैं, तो यह क्रोनिक तनाव का कारण बन सकता है, जो शरीर को हर समय तनावग्रस्त और चिंतित बनाता है।

खाद्य असुरक्षा का परिवारों पर भावनात्मक प्रभाव

परिवारों में भावनात्मक और मानसिक पीड़ा के सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक खाद्य असुरक्षा है। माता-पिता, विशेष रूप से महिलाएँ जो अक्सर घर में भोजन वितरित करने की ज़िम्मेदारी निभाती हैं, हमेशा इस बात की चिंता में मानसिक तनाव झेलती हैं कि खाने के लिए पर्याप्त भोजन होगा या नहीं। कुछ माता-पिता अपने बच्चों को खाना खिलाने के लिए भोजन के बिना रहने के परिणामस्वरूप मानसिक और शारीरिक थकावट से पीड़ित हो सकते हैं। जो बच्चे भूखे या कुपोषित होते हैं, वे नखरे, खराब एकाग्रता और कम आत्मसम्मान के शिकार हो सकते हैं (बंसल, एस., सिंह, ए., 2017)।

बच्चों में शैक्षणिक दबाव और मनोवैज्ञानिक संकट

इस व्यापक मान्यता के बावजूद कि शिक्षा लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में मदद करती है, कम आय वाले बच्चों को उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक कार्यक्रमों में दाखिला लेने और उन्हें पूरा करने की कोशिश करते समय भारी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। अपर्याप्त संसाधनों के बावजूद जब उनसे अकादमिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करने की उम्मीद की जाती है, तो युवाओं में अत्यधिक तनाव विकसित हो सकता है। कम आय वाले क्षेत्रों में कई बच्चों के लिए अकादमिक रूप से सफल होना चुनौतीपूर्ण है क्योंकि उनके पास पर्याप्त अध्ययन संसाधन, ट्यूटर या अध्ययन करने के लिए एक शांतिपूर्ण क्षेत्र तक पहुँच नहीं हो सकती है। मोहभंग, निराशावाद और आशाहीनता इस शैक्षिक अंतर के परिणाम हैं (वाघरे, के. 2001)।

सामाजिक कलंक और हाशिए पर डाले जाने के मनोवैज्ञानिक प्रभाव

सामाजिक पूर्वाग्रह वंचित पड़ोस के बच्चों और माता-पिता के मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा खतरा है। बहिष्कार, खराब

आत्म-सम्मान और चिड़चिड़ापन किसी के सामाजिक-आर्थिक स्तर, जाति या विरासत के कारण भेदभाव का अनुभव करने के सामान्य परिणाम हैं। माता-पिता पहले से ही काम पर भेदभाव या रोजगार अस्थिरता के बारे में चिंता किए बिना पर्याप्त मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से निपटते हैं। वे कम आंके जाने और असहाय होने की भावनाओं के कारण उदासी और चिंता के उच्च स्तर का अनुभव कर सकते हैं। वे और भी अधिक असहाय महसूस करते हैं क्योंकि वे सामाजिक गतिशीलता की अनुपस्थिति के कारण अपने बच्चों के लिए कोई रास्ता नहीं देख सकते हैं (भट, आर. वी. 2004)।

स्वास्थ्य देखभाल और पोषण कार्यक्रमों पर आर्थिक बोझ

वैश्विक स्तर पर, सार्वजनिक स्वास्थ्य संगठन, कानून निर्माता और सरकारें पोषण और स्वास्थ्य सेवा पहलों पर वित्तीय दबाव से जूझ रही हैं। चिकित्सा देखभाल के बढ़ते खर्च, भूख से जुड़ी बीमारियों और सामाजिक सहायता कार्यक्रमों की बढ़ती ज़रूरत के कारण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाएँ भारी वित्तीय दबाव में हैं। सभी के लिए अपर्याप्त स्वास्थ्य सेवा और पोषण पहले से ही एक समस्या है, और संसाधनों की कमी, खराब फंडिंग वितरण और संस्थागत बाधाओं के कारण कम आय और उत्पीड़ित आबादी के लिए यह और भी बदतर है। सार्वजनिक स्वास्थ्य में अपर्याप्त निवेश के दूरगामी सामाजिक-आर्थिक निहितार्थ हैं, और यह खंड सरकारों, स्वास्थ्य सेवा संगठनों और लोगों पर वित्तीय प्रभाव सहित विभिन्न कोणों से इन प्रभावों की जाँच करता है (भट, आर. वी., और वाघरे, के. 2000)।

- स्वास्थ्य देखभाल और कुपोषण उपचार की बढ़ती लागत
- सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों पर वित्तीय दबाव
- खाद्य असुरक्षा का स्वास्थ्य देखभाल लागत पर आर्थिक प्रभाव
- बाल कुपोषण से जुड़ी लागतें
- निजी क्षेत्र और सार्वजनिक-निजी भागीदारी की भूमिका

निष्कर्ष

गोंडा के बच्चों का स्वास्थ्य और विकास खाद्य धोखाधड़ी के कारण खतरे में है, जो चिंता का एक बड़ा कारण है। शोध के अनुसार, दूध, कैंडी, मसाले और खाद्य तेल नियमित रूप से खाए जाने वाले कुछ खाद्य पदार्थ हैं जो खतरनाक यौगिकों से दूषित पाए गए हैं। जठरांत्र संबंधी संकट और कमजोर प्रतिरक्षा सहित अल्पकालिक प्रभावों के अलावा, ये मिलावट बच्चों में कैंसर और अंग क्षति जैसी दीर्घकालिक जटिलताएँ पैदा कर सकती हैं। समस्या इस तथ्य से और बढ़ जाती है कि माता-पिता जोखिमों के बारे में नहीं जानते हैं और खाद्य सुरक्षा मानकों को पर्याप्त रूप से लागू नहीं किया जा रहा है। चूँकि उनके शरीर अभी भी परिपक्व हो रहे हैं और प्रदूषकों के प्रति उनकी प्रतिरोधक क्षमता कम है, इसलिए बच्चे अधिक संवेदनशील होते हैं और इसलिए वयस्कों की तुलना में अधिक नुकसान सहते हैं। इसलिए, खाद्य मिलावट से लड़ने के लिए, गोंडा को अधिक सख्त खाद्य गुणवत्ता निरीक्षण, अधिक सार्वजनिक जागरूकता और सामुदायिक भागीदारी की सख्त आवश्यकता है। क्षेत्र के बच्चों का भविष्य और कल्याण उन्हें सुरक्षित और स्वस्थ भोजन प्रदान करने की हमारी क्षमता पर निर्भर करता है।

संदर्भ

1. आचार्य, के.टी. (1994)। भारतीय भोजन-एक ऐतिहासिक साथी। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. अग्रवाल, एस.आर. (1990)। नब्बे के दशक में छोटे पैमाने के बिस्किट उद्योग की संभावनाएँ। भारतीय खाद्य उद्योग, 9, 19–21।
3. अलघ, के.एस. (1990)। भारत में बिस्किट उद्योग - भविष्य का परिदृश्य। भारतीय खाद्य उद्योग, 9, 18।
4. अल्मन्ज़ा, बी.ए., और नेस्मिथ, एम.एस. (2004)। संयुक्त राज्य अमेरिका में खाद्य सुरक्षा प्रमाणन विनियम। जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल हेल्थ, 66, 10।

5. कांग, जी., एट अल. (1997)। तमिलनाडु में येर्सिनिया से संबंधित खाद्य विषाक्तता का प्रकोप। इंडियन जर्नल ऑफ़ मेडिकल रिसर्च, 106, 465–468।

6. आचार्य, एम., और शाह, आर. (1999)। आम के गूदे के नमूनों की कुछ सूक्ष्मजीवविज्ञानी और रासायनिक विशेषताएँ। जर्नल ऑफ़ फ़ूड साइंस एंड टेक्नोलॉजी (मैसूर), 36, 339–341।

7. अल्टेक्रुसे, एस. एफ., और लेवी, ए. एस. (1996)। खाद्य जनित सूक्ष्मजीवी खतरों और खाद्य-प्रबंधन प्रथाओं के बारे में उपभोक्ता का ज्ञान। जर्नल ऑफ़ फ़ूड प्रोटेक्शन, 59, 287–294।

8. अल्टेक्रुसे, एस. एफ., और एंगुलो, एफ. जे. (1999)। उपभोक्ता खाद्य-प्रबंधन और खाद्य-उपभोग प्रथाओं का एक बहु-राज्य सर्वेक्षण। अमेरिकन जर्नल ऑफ़ प्रिवेंटिव मेडिसिन, 16, 216–221।

9. बद्री, एन., गोबिन, ए., और डंकन, आर. (2006)। त्रिनिदाद, वेस्ट इंडीज में खाद्य सुरक्षा खतरों के प्रति उपभोक्ता जागरूकता और धारणा। खाद्य नियंत्रण, 17, 370–377।

10. बेकर, जी. ए. (2003)। खाद्य सुरक्षा और भय: खाद्य सुरक्षा जोखिम के प्रति उपभोक्ता प्रतिक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक। अंतर्राष्ट्रीय खाद्य और कृषि व्यवसाय प्रबंधन समीक्षा, 1(1), 1–11।

11. बार्कले, एम., और केल, एल. (2001)। चौथी और पांचवीं कक्षा के छात्रों का खाद्य-हैंडलिंग ज्ञान और अभ्यास: बेहतर स्वच्छता की कुंजी। जर्नल ऑफ चाइल्ड न्यूट्रिशन एंड मैनेजमेंट, 25, 72–75।

12. बंसल, एस., सिंह, ए., (2017)। खाद्य मिलावट: स्रोत, स्वास्थ्य जोखिम और पता लगाने के तरीके। खाद्य विज्ञान और पोषण में महत्वपूर्ण समीक्षा, 57, 1174–1189।

13. भट, आर. वी., और वाघरे, के. (2001)। एशियाई देशों में बिकने वाले स्ट्रीट फूड्स की प्रोफाइल। वर्ल्ड रिव्यू ऑफ न्यूट्रिशन एंड डायटेटिक्स, 86, 53–99।

14. भट, आर. वी. (2004)। खाद्य सुरक्षा - अवलोकन [पेपर प्रस्तुति]। खाद्य सुरक्षा पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला, खाद्य और पोषण विभाग, एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, वडोदरा, भारत।

15. भट, आर. वी., और वाघरे, के. (2000)। लैटिन अमेरिका में स्ट्रीट फूड्स। ए. पी. सिमोपोलोस और आर. वी. भट (संपादकों) में, स्ट्रीट फूड्स (वर्ल्ड रिव्यू ऑफ न्यूट्रिशन एंड डायटेटिक्स, खंड 86, पृष्ठ 123-137)। कर्जर।